International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly

ISSN – 2347-7075
Impact Factor – 7.065
Vol.8 No.2 Nov – Dec 2020

''थर्ड जेन्डर विमर्ष और हिंदी नाटक 'हरारत' ''

प्रा. व्हि. पी. नंदगिरीकर
हिंदी विभागाध्यक्ष,
बॅ. खर्डेकर महाविद्यालय, वेंगुर्ला (महाराष्ट्र)

वर्तमान हिंदी साहित्य में अलग–अलग विमर्श का दौर चल रहा है। स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श में उन सामाजिक समूहों के अस्तित्व और अधिकारों को लेकर विस्तृत चर्चाए की गई है। इन्ही के साथ आज कल एक ऐसे मानवी समूह को भी जगह दिलाई गई है, जिसके मानवी अस्तित्व को ही प्राचिन काल से नकारा गया है। क्योंकि अब तक आम तौर पर यही माना गया है कि मानवी समाज केवल स्त्री और पुरूष की सहभागिता का ही नाम है। अर्थात मनुष्य ने सदियों से अपनी सुविधा के लिए समाज के स्त्री और पुरूष इसी दो हिस्सों में बाटकर देखा है। पिछले कुछ सालों तक समाज में रहे किसी तीसरे हिस्से की कल्पना ही नही की गई थी। समाज का यही अनदेखा किया गया हिस्सा है – थर्ड जेंडर। जिसे हिज़डा, किन्नर, नपुंसक, रव्वाजा, जोगप्पा, जोगता, षिवभक्त, छक्का, मौसी, अलिंगी, अपूर्ण लिंगी सहित विविध प्रदेषों मे विविध शब्दिक संकेतो द्वारा संबोधित किया जाता है। समाज में अपने अस्तित्व की पहचान के लिए पिछले कुछ सालों से अनेक सामाजिक संस्थाएँ तथा इस वर्ग के संघटन लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी जैसे किन्नर के माध्यम से प्रयत्न कर रहे है। मानो समाज का यह हिस्सा अब धिरे धिरे अपने अस्तित्व के प्रती सभी का ध्यान केंद्रित करने में सफल हो रहा है। यही कारण है कि 15 अप्रैल 2014 को माननीय उच्चतम न्यायालयन ने अपने निर्णय में इस हिस्से को हिज़डा, किन्नर तथा तत्सम अपमानजनक शब्दो से संबोधित करने क बजाय थर्ड जेंडर (तृतीय लिंगी या तृतीय पंथी) घोषित किया है। दुसरी ओर अन्य प्रादेषिक भाषाओं के समान हिंदी साहित्य में भी अनेक रचनाकारो ने अपनी रचनाओ में इस वर्ग की वास्तविक पहचान को प्रस्तुत करते हुए पाठकों को समाज के इस तीसरे वर्ग के संबंधमें विचार करने के लिए, उनके बारे में सोचने के लिए मजबुर किया हुआ दिखाई देता है।

थर्ड जेन्डर विमर्ष : सामान्य परिचय :

थर्ड जेण्डर अर्थात तृतीय लिंगी मनुष्य रूप का उल्लेख भारतीय इतिहास में पौराणिक काल से ही हिज़डा, किन्नर, मौसी जैसे संबोधन से हुआ दिखाई देता है। महाभारत में इसका उल्लेख षिरवन्डी, बृहनला नाम से मिलता है, तो रामायण में श्रीराम ने इन्हे दुसरों के आनंद

मे आनंदीत होकर अषिर्वचन देने के लिए वरदान दिया था। इसके अतिरिक्त हमारे यहा के अनेक ऐतिहासिक राजा–महाराजाओं के दरबारों में इन किन्नरों को राणीयों के पहरेदार के रूप में रखा गया था इस बात के संदर्भ मिलते है। मुस्लिम शासको के दरबार मे भी यह हिज़डे खाजासरा के नाम से सुरक्षाकर्मी के रूप में तैनात किए जाते थे। कहा जाता है कि आज हमारे देष में इतकी संख्या लाखो में है। फिर भी इनके अस्तित्व को नकारा जाता है। शरतीय संस्कति और भारतीय इतिहास में इनके अस्तित्व की साक्ष अनेक स्थानों पर मिलती है। जो अधिक गौरवपूर्ण नही है। क्योंकी आज भी हिज़डा शब्द सुनते ही सुननेवाले के दिलो दिमाग मे एक ऐसे व्यक्ति की तस्वीर तैयार होती है, जो न स्त्री होती है न पूर्ण पुरूष। '' इठलाती चाल, गहनो से सजा हुआ शरीर, चमकीले कपडे व चेहरे पर ढेर सारा मेकअप और दुकानों व घरों और बच्चों के जन्म पर विवाह आयोजन जैसे अन्य कार्यक्रमों में नाच गा कर पैसा कमानेवाला, ––––– पैसे नही दिये तो गाली–गलौज या कोई बदतमीजी न कर दे, कोई बददुआ न दे दें। दरअसल समाज में रहते हुए भी समाज से पृथक ऐसी ईकाई के रूप में इनकी पहचान होती है जो वास्तविकताओं के बजाय पूर्वाग्रहों मान्यताओ और अफवाहो पर ही आधारित होती है।''[1] कहा जाता है कि इसकी सामाजिक संरचना बडी जटिल होती है। जैसे हर किन्नर अर्थात हर हिज़डे का अपना घर या घराना होता है। उस घर का एक मुखिया होता है, जिसे नायक कहते है। नायक के नीचे गुरू होता है, वहा मॉ–बाप होता है। नए किन्नर का गुरू के साथ ही विवाह किया जाता है। आम तौर पर चाहे महिला हिज़डा हो या पुरूष, अपना जीवन यापन नाच गा कर, मॉग कर ही करते है। शरीर विज्ञान के अनुसार इनके शरीर का उपरी हिस्सा स्त्री शरीर जैसा विकसीत होता है और निचेवाला हिस्सा पुरूष जैसा किंतु वह पूर्ण विकसीत न होकर अपूर्णलिंगी होता है। इन किन्नरो के अंतर्गत विभाजन पर चर्चा करते हुए डॉ. एस फीरोज अहमद जी ने एक स्थान पर लिखा है कि ' आज देष में किन्नरो के लगभग 500 धाम है। उनकी अराध्य देवी बहुजरा/बुचरा माता है। इनका मन्दिर गुजरात में है। एक किवदंती के अनुसार बुचरा माता की अन्य तीन बहने– नीलिमा, मनसा और हंसा थी। बुचरा हिज़डा बनी तो बची बहनों को भी उन्होने अपने जैसा बना दिया। इनकी चार शाखाऍ है–इनमे से बुचरा शाखा में पैदाइषी किन्नर, नीलिमा की शाखा में जबरन बनाए गए किन्नर, मनसा शाखा में इच्छा से बने किन्नर और हंसा शाखा में उन्हे रखा जाता है जो अपनी शारीरिक कमी के कारण किन्नर बनते है। एक अन्य विभाजन के अन्तर्गत नीलिमा शाखा के किन्नर गाने और डफली बजाने का काम करते है तो मनसा शाखा का काम किन्नर बनानेवाले व्यक्ति के लिए सामान इकठ्ठा करना है। जब बुचरा किसी के किन्नर बना रहे होते है तब हंसा के जिम्में साफ–सफाई का काम आता है। साथ ही कब्र खोदने और उसमे राख डालने का काम भी केवल बुचरा हंसा शाखा के किन्नर ही करते है, शवों पर पहल मिठ्ठी डालने का काम बुचरा शाखा के किन्नर ही करते है।''[2] इससे हिज़डों की सामाजिक संरचना का भलिभॉति ज्ञान होता है कि हिज़डे अपना सामाजिक जीवन यापन कैसे

करते है तथा शरीर विज्ञान उनके अलिंगी या अपूर्णलिंगी होने का संकेत देता है। एक मान्यता के अनुसार हिज़डा शरीर से चाहे स्त्री हो या पुरूष मगर उसकी आत्मा और उसका आंतरिक मन स्त्री का होता है। यही कारण है कि हिज़डा पुरूष के प्रती आकर्षित होकर अपनी लैगींक वासना का पूर्ति करके स्त्री के समान मॉ बनने की इच्छा रखता है किंतु अपूर्ण लिंगी होने से न उसकी कामपूर्ती होती है न ईच्छापूर्ती। इसके विपरित सामाजिक स्तर पर उसे जिंदगीभर अपमानित किया जाता है। घरवाले, परिवारवाले सगे संबंधियों से उन्हे उपेक्षा सहननी पडती है। सामाजिक और आर्थिक तौर पर ये असुरक्षित और निस्साहाय होते है। उनके संबंधमें कही गई अधिकतर बाते दकियानुसी होती है। उनके संबंधमें अफवाऍ फैलाकर उन्हे समाज से अधिक दूर धकेला जाता है। सामाजिक स्तरपर हिज़डा कि सही पहचान कराते हुए लक्ष्मीनारायण त्रीपाठी ने अपने आत्मकथन में लिखा है कि '' हिज़डा – हिज मतलब आत्मा ––– पवित्र आत्मा। जिस शरीर में ये आत्मा रहती है, वो हिज़डा। यहॉ व्यक्ति को महत्व नही है महत्व है उस आत्मा का और उसे धारण करनेवाले हिज़डा समाज का। इस समाज से भगवान प्यार करते है और इसीलिए उसने उनके लिए एक अलग राह, अलग जगह तैयार की ––– जो हमेषा के स्त्री–पुरूष की कक्षा से बाहर है। स्त्री और पुरूष इन दो रेखाओं के बीच के हम ––– बिटवीन द लाइन्स।[3]'' लक्ष्मी द्वारा कही गई यह पहचान असल में पूरे हिज़डा समाज की वेदना है। इस वेदना के लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी की तरह मराठी मे पारू मदन नाईक ने 'मी का नाही' षिर्षक आत्मकथन द्वारा सभ्य समाज के सामने रखा है। इन दोनों की तरह आज मनीषा महंत (हरियाणा), सलोनी (अजमेर), रवीना बरीहा (रायपूर), रेषमा (लखनऊ) जैसे अनेक किन्नर स्वयं मिडिया के सामने आकर अपनी समस्याऍ और अपने अधिकारो की माँग बडी निडरता से करती हुई दिखाई देती है। तो दुसरी ओर शबनम मौसी जैसे अनेक किन्नर राजनीतिक पटल पर अपनी पहचान बना चुके है। भारतीय फिल्मों मे नायक, खलनायक, सहनायक के रूप में इनके जीवन की अच्छी–बुरी सच्चाईयों पर प्रकाष डाला गया तो किन्नरो का जीवन संवरने के लिए जिंदगीभर कष्ट उठानेवाले गौरी सांवत नामक किन्नर '' उंच माझा झोका नामक झी पुरस्कार प्राप्त करके झी चॅनल के मंच पर खडे होकर पूरे समाज को '' आपने हमारे लिए कुछ किया क्यों नही ? यह सवाल करके अपने इन्सान होने का एहसास दिलाता है। आज इस समाज को भारतीय संविधान के भाग III तथा संसद और विधान सभाओं द्वारा पारित कानून के अन्तर्गत उनके सम्मान और अधिकारों का सुरक्षित रखने के लिए द्विलिंगी समाज के अतिरिक्त उन्हे ''थर्ड जेन्डर'' में रखा गया है। इसलिए अब इस समुदाय के लोगों को हिज़डा, किन्नर, छक्का जैसे मानहानीकारक संबोधनों के बजाय थर्ड जेन्डर नाम से पहचाना जाता है।

हिंदी साहित्य के क्षेत्र में थर्ड जेन्डर एकदम नया विषय है। अर्थात थर्ड जेन्डर पर केन्द्रित विमर्ष साहित्य के दायरे में हाल ही में लाया गया है। वर्तमान युग में लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी (महामंडलेष्वर) काल्कि सुब्रम्हण्यम, मानवी वंद्योपाध्याय, ए. रेवती, विद्या, पायल सिंह,

शबनम मौसी, गौरी सावंत, सलोनी, मनीषा महंत जैसी इस समाज की अनेक प्रसिध्द प्रतिनिधी है जिनकी राजनीती, समाज, साहित्य एवं कला जैसे क्षेत्रों में अलग सी पहचान निर्माण हुई है। इन सभी के पास अपने और अपने समाज के दयनीय जीवन का व्यापक अनुभव है। उस अनुभव को इन्होने समय समय पर साहित्य और मिडीया के माध्यम से सामान्य जनों के सम्मुख अभिव्यक्त किया है। हिंदी साहित्य में दाखील हुआ थर्ड जेन्डर विमर्ष उसी अभिव्यक्ति की प्रतिक्रिया है, ऐसा मुझे लगता है। वर्तमान युग के अनेक हिंदी साहित्यकारों ने अपनी अपनी रचनाओं में इस वर्ग के भौतिक जीवन का पूरी इमानदारी और संवेदनषीलता के साथ प्रस्तुत किया हुआ दिखाई देता है। आनन्दप्रकाष त्रिपाठी के अनुसार थर्ड जेन्डर के केंद्र मे सरकार लिखे गए अनेक साहित्यिक कृतियों के ''साहित्यकारों ने हिज़डा समुदायक के दुःख–दर्द, अपमान, उपेक्षा, शोषण और जीवन की कटुसच्चाई को बिना किसी रंग–रोगन, लाग–लपेट और काल्पनिकता के, संवेदना और करूणा के विषद पाट पर चित्रित कर उनकी व्यथा–कथा से पाठको / समाज को परिचित ही नहीं कराया, अपितु उनके प्रतिरोध को वाणी भी दी। उन्हे उनकी अस्मिता से परिचित कराया और समाज में उनके जीने लायक सम्मान और अधिकार की बहाली का प्रष्न उठाया है। एक नयी सामाजिक चेतना से प्रेरित होकर साहित्यकारों ने हिज़डो के जीवन यथार्थ को नये सिरे से पहचाना और उनके जीवन में आये परिवर्तन को बडी संजदिगी से अपनी रचनाओ मे उभारा है। बडी निर्भीकता और बेबाकी से कई रचनाकारो ने कविताएँ और कथाकृतियॉ रची है।'' [4] इस दृष्टीसे आज हिंदी मे षिवप्रसाद सिंह, राही मासूम रजा, चित्रा मुदगल, वीना वर्मा, बलजीत सिंह रैना, एस. बलवंत, हरीष बी. शर्मा, श्रीकृष्ण सैनी, चॉद दीपिका, पूनम पाठक, डॉ. पद्मा शर्मा जैसे अनेक रचनाकारो ने अपनी अपनी रचनाओ मे थर्ड जेन्डर वर्ग के लोगो का दुःख, दर्द, पीडा वेदना को अत्यंत प्रामाणिकता से प्रस्तूत करते हुए उनके हक मे अपनी आवाज बुलंद की है। मेरी दृष्टी से यह साहित्य हिंदी के क्षेत्र मे थर्ड जेन्डर विमर्ष को स्थापित करने के लिए नवीन आयाम प्रदान करता हुआ समाज के सबसे अधिक उपेक्षित, अपमानित, अस्तिवहिन, प्रताडीत, असुरक्षित, निस्सहाय तबके को पाठकों की सोच के केंद्र में लाने का एक साहसिंक किंतु अत्यंत प्रामाणिक प्रयत्न है। इसमे किसी भी तरह की दोराय नही है।

थर्ड जेन्डर और हिंदी नाटक '' हरारत '' :

हिंदी नाटक साहित्य मे थर्डजेन्डर को लेकर वैसे तो अधिक चर्चा नही मिलती है। मगर इसका अर्थ यह नही है की हिंदी नाटक मे इस वर्ग के चरित्रों का अविर्भाव ही नही हुआ है। इस दृष्टी से देखे तो सुरेंद्र वर्मा द्वारा रचित प्रसिध्द नाटक '' सुर्य की अंतिम किरण से सुर्य की पहली किरण तक'' नाटक थर्ड जेन्डर विमर्ष का एक सषक्त नाटक स्विकारा जा सकता है। क्योंकी नाटक मे चित्रित राजा ओक्लाक अपनी शारिरीक कमजोरी को, अपने लैगींक विकलांगता को स्विकारते हुए अपमानजनक स्थिति का सामना करता है।

अपने नपुसंकता की पीडा को वह महतरिका के सामने कुबुल करते हुए बडी ही हताषता से कहता है की '' ––– तुम्हारा पति निष्चित है, क्योंकी तुम मेरे पास हो। –––इस धरती की किसी भी युवती को मुझसे कोई डर नही ––– जो मेरी ऑखो को भाये, वह भी सुरक्षित है –––जो मेरी बॉहो में समाये, वह भी सुरक्षित––जो मेरी शैया पर आये, वह भी सुरक्षित ––– ये बलात्कार ––ये आत्मसमर्पण ––ये चरिहरण–– केवल एक उलझन है मेरे लिए बस एक पहेली।''[5] राजा की यह विवषता, हताषता वर्तमान युग के थर्ड जेन्डर की दर्दनाक पीडा है। पुरूष होकर भी नपुसंकत्व के कारण उन्हे जिस भयानक अपमान को सहनना पडता है वह अपमान उन्हे समाज से अलग करता है। हॉलाकी यह नाटक सुरेंद्र वर्मा के अनुसार पुरूष और स्त्री की अपूर्णता और अधूरेपन के संदर्भ मे है। परंतु इसमें नाटककारने पुरूष के शारिरीक अपूर्णता पर उसके आत्मक्लेषपर, उसके आत्मपीडा पर प्रकाष डालने के बजाय नारी के आत्मसंतोष और व्यक्तिगत सुख की अधिक चर्चा की है। परिणामतः यह नाटक थर्ड जेन्डर का प्रतिकात्मक नाटक होने के बजाय उनके नपुसंकत्व जीवन के भयानक अधुरेपन केवल पहचान करानेवाली कृती लगता है। इसकी तुलना में हरीष बी. शर्मा कृत '' हरारत यह लघुनाटयकृती वर्तमानकालिन थर्ड जेन्डर के मानवीय संवेदनाओ को अत्यंत प्रामाणिकता से प्रस्तुत करनेवाली एक सषक्त नाटयकृती लगती है। वैसे तो शर्माजी की यह लघुनाटयकृती अब तक प्रकाषीत नही की गई है। अर्थात यह एक अप्रकाषीत नाटयकृती है जिसका मंचन जयपूर और षिमला मे अनेक बार हुआ है। नाटककार शर्माजी के अनुसार इस नाटक की मूल थीम है की '' क्या किसी किन्नर के मन मे मॉ या बाप बनने की इच्छा नही जगती।''[6] इसी थीम को केंद्र मे रखकर संपूर्ण नाटक के कथानक का उन्होने ताना–बाना बुना है। लघुनाटक होते हुए भी नाटककारने इसमे कुल छः दृष्यो का आयोजन किया है और सात चरित्रों को यहा साकार किया है। उनमे से कथानक की दृष्टी से बाईस साल की युवती शषी और पैतींस साल का किन्नर चंपा यह दो पात्र प्रमुख है। बाकी अकबर, बबलु, पप्पु, टिसी आदि गौण पात्र है। नाटक का प्रारंभ शषी ट्रेन सफर से होता है। यह बाईस साल अविवाहित लडकी मॉ बननेवाली है। उसे एक ओर प्रेमी ने धोखा दिया है तो दुसरी ओर उसके माता पिता उसका बच्चा गीराना चाहते थे। मगर शशी बच्चे को जन्म देना चाहती थी। इस स्थिती में वह घर से भागकर ट्रेन में सफर करते हुए स्टेषन पर आती है। अकेली लडकी को देखकर पहले टीटी और उससे बचाने के लिए इन्सानियत का चोला पहनकर आगे अकबर, पप्पू और बबलू उसका लैंगिक षोषण करने के लिए उसपे झपट पडते है, असहाय षषी उनसे बचने के लिए स्टेषनपर दौडती है। इसी अवस्था में वह फुटपाथ पर सो रही किन्नर चंपा पर गीरती है। इसी टकराहट में स़्त्री या पुरूष की योनी में जन्म न लेने के बाद शी मनुष्यता की पराकाष्टा पर पहुॅचा हुवा किन्नर चंपा की व्यक्तित्व षषी के सामने आता है। क्योंकी यही किन्नर चंपा षषी को अपने पास रखते हुए उसके बच्चे को दुनिया में लाने के लिए उसकी रक्षक बनकर ऐलान करती है कि ''षषी मेरे मेहमान है। यहॉ बच्चा जनने आई है। समझ गये

ना।''[7] इसके पष्चात किन्नर चंपा षषी की हर तरह सेवा करती है मानो एक तरफ शषी के पेट में बच्चा बढता रहता है, तो दुसरी तरफ किन्नर चंपा के मन में मातृत्व की शवना दिन प्रती दिन असंत संवेदनषील बनती और बढती रहती है। अपने इसी मातृत्व शव को वह अनेक बार षषी के सामने व्यक्त करती है। इसके विपरीत उसे अपने किन्नर होने का एहसास शी है। अपने इसी द्वंद्वात्मक शव को व्यक्त करते हुए कहती है की, ''...तु कान खोलकर सुन ले पैदा होते ही सबसे पहले गोद में मै लुँगी। ...उसने मुझे मॉ पुकारा ...नही चंपा मॉ नही हो सकती रे, बच्चा है ना, जानता नहीं दुनियादारी बाहर आएगा, कुछ समझेगा, परखेगा तो शूल जाएगा।''[8] किन्नर चंपा के मन में निर्माण हुँआ यह मातृत्व शव षषी को शी प्रशवित करता है। यही कारण है कि वह अपने न जन्मे बच्चे पर अपने से ज्यादा किन्नर चंपा का अधिकार अधिक मानती है। वह चंपा से कहती है कि ''...मै तो शगवानसे यह अरदास करती हूँ कि ये मुझे शूले।...तुम्हे नही शूले।''[9] षषी द्वारा कही गई यही बात नाटक के अंतिम दृष्य में सच होती हुई दिखाई देती है। प्रसव पीडा में षषी को मौत हो जाती है और उसका बच्चा किन्नर चंपा की गोद में रखकर नाटककार षर्मा जी ने अपनी नाटकीय थीम को सफल बना दिया है।

समीक्षात्मक दृष्टी से देखे तो 'हराहत' यह नाटक थर्ड जेन्डर का प्रतिनीधित्व करनेवाले एक अलिंगी या अपूर्ण लिंगी व्यक्ति के मानवीय शवों का बडे ही सषक्तता से रेखांकन करता हुआ दिखाई देता है। षरीर से स्त्री या पुरूष न होते हुए शी अपने छिपे नारित्वशव के किन्नर चंपा के मन में मॉंश्बनने की इच्छा निर्माण होती है। असहाय्य षषी को वह प्रारंश में मानवतावादी मूल्यों की कल्पना नहीं कर सकता क्योंकि सामान्यतः थर्ड जेन्डर का हर एक व्यक्ती अर्थात हर एक किन्नर लोगों के बीच में एक तो गाली देते हुए, नही तो पैसा वसूलते हुए या मारपीट करते हुए या अष्लिल बाते करते हुए देखा जाता है। किन्तु ऐसे व्यक्ति के मन में स्त्री शव की कोमलता और हृदय में मातृत्व की आस निरंतर पनपती है। इस बात का सही परिचय इस नाटयकृति के माध्यम से हरीष जीने बडी सरलता से किया हुवा दिखाई देता है। डॉ. षगुप्ता नियाज के अनुसार ''हरीष बी. षर्मा का लघु नाटय 'हरारत' मानवीय संवेदनाओको छूता हुआ नाटक है। आज के युग में जब मानवीय मूल्यों का तीव्र गतिसे ह्रस हो रहा है, उसमें मानवीय मूल्यों की हरारत किन्नर चंपा पूरी तरह विद्यमान है। नाटक में द्विलिंगी नर और मादा आगे जाकर एक किन्नर मानवीय मूल्यों रक्षा करता हुआ अपने अस्तित्व का परिचय देता है जो अशिषक्त किन्नर रूप का असंत उज्वल पक्ष प्रस्तुत करता है।''[10] डॉ. नियाज द्वारा प्रस्तुत हुआ यह समीक्षात्मक मत 'हरारत' नाटयकृती को 'थर्ड जेन्डर' विमर्ष की दृष्टी से सबसे नाटयकृती प्रमाणित करता हैं। क्योंकि आज के वर्तमान युग में जहां मानवीय मूल्यों का पूरी तरह से ऱ्हास हो चुका है, स्त्री पुरूष से बने समाज का हर तबका अपने अपने स्वार्थ में अंधा होकर एक दुसरे साथ हिंस्त्र पषु जैसा व्यवहार कर रहा है।

अपने खुद की अपेक्षापूर्ती के लिए वह हर तरह के घिनौने कृत्य करता रहता है। ऐसे भयंकर स्थिति में असामान्य लिंगी होने के नाते सामाजिक उपेक्षा और भयंकर अपमान सहन करनेवाले थर्ड जेन्डर के लोग ही आज समाज मे साहित्य, कला और विविध सामाजिक संस्थाओ के माध्यम से सही अर्थो में मानवीय मूल्यों की स्थापना करते हुए दिखाई देते है। थर्ड जेन्डर विमर्ष के माध्यम से उनके इसी योगदान पर प्रकाष डाला जा रहा है। इसके अतिरिक्त आज हर वंचित, उपेक्षित, शोषित– पीडित व्यक्ति मुख्यधारा में आने के लिए छटपटा रहा है, थर्ड जेन्डर का व्यक्ति भी उनके समान मुख्यधारा में आने के लिए, अपने अधिकारों और सम्मानजनक जीवन के लिए संघर्ष करता हुआ दिखाई देता है। उनके इसी संघर्षात्मक प्रयासों को आज के वर्तमान युगीन हिंदी रचनाकार अपनी–अपनी रचनाओ में इमानदारी से प्रस्तुत कर रहे है। जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि नारी विमर्ष, दलित विमर्ष और आदिवासी विमर्ष के समान आनेवाले कुछ ही दिनो मे थर्ड जेन्डर विमर्ष भी हिंदी साहित्य के केंद्र में आकर अधिक सषक्त और समृध्द बन जाएगा।

संदर्भ सुची :

1. ''थर्ड जेन्डर'' – प्रा. मेराज अहमद – पृष्ठ 09
2. वाङमय (त्रैमासिक जुलाई–दिसम्बर 2017) सम्पा. डॉ. एम फिरोज अहमद– पृष्ठ 07
3. ''मै हिज़डा ––मै लक्ष्मी'' – लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी – पृष्ठ 50
4. वाङमय (त्रैमासिक जुलाई–दिसम्बर 2017) आनन्द प्रकाष त्रिपाठी – पृष्ठ 106
5. ''सुरज की अंतिम किरण से सुरज की पहली किरण तक'' – सुरेंद्र वर्मा – पृष्ठ 42
6. ''हरारत'' (अप्रकाशित) हरीश बी. शर्मा – पृष्ठ 02
7. ''हरारत'' (अप्रकाशित) हरीश बी. शर्मा – पृष्ठ 04
8. ''हरारत'' (अप्रकाशित) हरीश बी. शर्मा – पृष्ठ 06
9. ''हरारत'' (अप्रकाशित) हरीश बी. शर्मा – पृष्ठ 07
10. वाङमय (त्रैमासिक जुलाई–दिसम्बर 2017) डॉ. शगुप्ता नियाज – पृष्ठ 187